बिटिया का गीत

(ग्रामीण साहित्य माला पुष्प– 5)

भारतीय प्रौढ़ शिक्षा संघ

बिटिया का गीत

[गाँवों की रोचक और उपयोगी कहानियाँ]

लेखक
शिव गोविन्द त्रिपाठी

सम्पादक
डॉ० सुशील 'गौतम'

प्रकाशक
भारतीय प्रौढ़ शिक्षा संघ

प्रकाशक :

भारतीय प्रौढ़ शिक्षा संघ
17 बी, इन्द्रप्रस्थ मार्ग
नई दिल्ली-2

प्रथम संस्करण : २,०००

द्वितीय संस्करण : ५,०००

मूल्य : 3.00 रुपये

यूनेस्को की आर्थिक सहायता से
प्रकाशित

रूप सज्जा :
डॉ० सुशील 'गौतम'

पुस्तक शृंखला संख्या : 122

मुद्रक
मान-हरि प्रेस
ए-३१, सेक्टर-२
नोयडा (यू० पी०
फोन-८०५-२८०

भूमिका

भारतीय प्रौढ़ शिक्षा संघ की और से ग्रामीण बहिन-भाइयों को ग्रामीण साहित्य माला का पांचवाँ पुष्प भेंट करते हुए हमें अत्यन्त प्रसन्नता हो रही है। यह साहित्य माला साक्षरता की दिशा में आगे बढ़ने के लिए एक आवश्यक कदम है। वास्तव में, साक्षरता की मूल समस्या अक्षर ज्ञान प्राप्त करने के बाद की समस्या है। व्यक्ति लिखने पढ़ने में निरन्तर कुशल बना रहे उसके लिए आवश्यक है कि अक्षर ज्ञान प्राप्त कर लेने के बाद भी लिखने-पढ़ने का अभ्यास जारी रखा जाए। लिखना-पढ़ना जारी रखने के लिए सरल, मोहक, रोचक तथा उपयोगी पुस्तकों का होना अत्यन्त आवश्यक है। इसका अर्थ यह भी है कि लेखकों को भी यथेष्ट अवसर प्रदान किए जाएं।

जो लोग प्रौढ़ शिक्षा में रुचि रखते हैं और प्रौढ़ों को पढ़ने-लिखने के लिए बढ़ावा देना चाहते हैं उनके लिए सरल, उपयोगी और रोचक सामग्री उत्पादन करना बहुत आवश्यक है। इस आवश्यकता को अनुभव करते हुए भारतीय प्रौढ़ शिक्षा संघ ने ग्रामीण जनता के लिए साहित्य-उत्पादन पर विचार विमर्श करने के लिए, हिन्दी लेखकों की सहायता लेने तथा उनकी एक गोष्ठी आयोजित करने का निश्चय किया।

यह चर्चा, विचार विमर्श तथा गोष्ठी, 4 अगस्त 1978 से 6 अगस्त 1978 तक, नई दिल्ली में, आयोजित की गई। इसका उद्घाटन हिन्दी के जाने-माने लेखक एवं संसद सदस्य श्री भगवती चरण वर्मा द्वारा किया गया। भारतीय ज्ञानपीठ के सचिव श्री लक्ष्मी चन्द जैन ने इसका निर्देशन किया।

जिन मशहूर लेखकों ने इस चर्चा में भाग लिया, उनमें से कुछ ये हैं :

सर्वश्री जैनेन्द्र कुमार, हरिवंश राय 'बच्चन', प्रभाकर माचवे, रमा प्रसन्न नायक, कमला रत्नम्, राजेन्द्र अवस्थी, मन्नू भण्डारी, राजेन्द्र यादव, इन्दु जैन, बालशौरी रेड्डी इत्यादि। कुछ मशहूर प्रकाशकों ने भी अपना-अपना दृष्टिकोण और अपनी समस्यायें प्रस्तुत करने की चेष्टा की। इन प्रकाशकों में से प्रमुख प्रकाशक थे सर्वश्री दीना नाथ मल्होत्रा, यशपाल जैन, कृष्ण चन्द्र बेरी, रघुवीर शरण बंसल, शीला सन्धु इत्यादि।

हम, इन सभी सहयोगियों के आभारी हैं कि उन्होंने कार्यशाला को महान सफलता प्रदान की। उन चर्चाओं के आधार पर ये दस पुस्तकें भेंट करते हुए हमें हर्ष हो रहा है। हमें पूरी आशा है कि ग्रामीण जन-समाज इसका खुशी से स्वागत करेगा, क्योंकि ये पुस्तकें उनके जीवन से, उनकी समस्याओं से, उनके परिवेश एवं उनकी संस्कृति से जुड़ी हैं।

हम यूनेस्को के आभारी हैं कि उन्होंने यह गोष्ठी आयोजित करने के लिए संघ को आर्थिक सहायता प्रदान की।

इस गोष्ठी में गोष्ठी के निर्देशक श्री लक्ष्मी चन्द जैन के कुशल निर्देशन एवं सूझ-बूझ तथा प्रौढ़ शिक्षा की सम्पादिका श्रीमती बिमला दत्ता की लगन, मेहनत और भाग-दौड़ ने गोष्ठी को सफल बनाने में बहुत सहायता दी। संघ इनका भी बहुत आभारी है।

आशा है कि पाठकों को यह प्रस्तुत ग्रामीण साहित्य माला पसन्द आएगी।

भारतीय प्रौढ़ शिक्षा संघ
17-बी, इन्द्रप्रस्थ मार्ग,
नई दिल्ली.
2 अक्टूबर 1978

शिव चन्द्र दत्ता
अवैतनिक महासचिव

बिटिया का गीत

कथा–क्रम

- पोखन और गन्जू
- दिल जली
- मुठ-भेड़
- राम दास की उलझन
- बिटिया का गीत

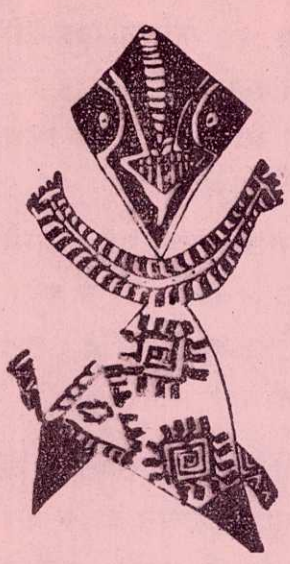

पोखन और गन्जू

[1]

चैत का महीना था। गेहूं की फसल काटी जा रही थी। रामसुख और पुनिया ने उस दिन बराबर अपना खेत काटा और बोझ बांध-बांधकर खलिहान में लगाए। फिर बैलों को लेकर घर चल दिए। रात हो गई थी। अंधेरा घना हो चला था। कुत्ते भौंकने लगे थे। घर आकर रामसुख ने बैलों को खूंटे से बांध दिया। घर में उन दोनों के अलावा और कोई नहीं था। वे, ताला लगाकर खेत पर गए थे। पुनिया बाहर का ताला खोलने लगी। तभी दराज से आंगन में रोशनी दिखाई पड़ी। पुनिया के हाथ जहां के तहां रुक गए। वह कांप सी गई।

रामसुख ने भी दराज से झांक कर देखा। आंगन में हल्की-हल्की रोशनी फैली थी। दो आदमी इधर से उधर टहल रहे थे। वे काफी लम्बे थे। जैसे कोई राक्षस हों। दोनों काले लम्बे चोगे पहने थे। उनकी बड़ी-बड़ी मूछें और दाढ़ी थी। सूरत उनकी बड़ी डरावनी लग रही थी। रामसुख सोचने लगा क्या यह चोर है? नहीं-नहीं। भला चोर मेरे यहां क्या लेंगे। तो क्या...यह भूत-प्रेत हैं? नहीं...नहीं। मैंने किताबों में पढ़ा है कि भूत-प्रेत तो कमजोर दिल का भय होता है। पुनिया डर के मारे आंखें बन्द करके बैठ गई। रामसुख खड़ा-

खड़ा सोचता रहा। " मां और बापू भी तो दिखाई पड़े थे। लेकिन वह तो सपना था। मैंने पढ़ा है। जिनकी बहुत याद आती है वे सपने में दिखाई पड़ सकते हैं। खैर मैं भूतों को तो मानता नहीं। मैं भी तो आदमी हूं। डर किस बात का। देखता हूं कौन है ?

रामसुख ने ताला खोल दिया। कुंडी खन्न से नीचे लटक गई। तभी भीतर से पैर पटकने की आवाज आई। कड़कती आवाज में किसी ने कहा, "खबरदार रामसुख ! अब यह मकान हम भूतों का डेरा बन चुका है। तुम इस में पैर मत रखो। जाओ गांव से भाग जाओ। वरना खैर नहीं है।"

रामसुख ने किवाड़ खोल दिया। घर में जो धीमा-धीमा उजाला हो रहा था, वह बुझ गया। लम्बे-लम्बे भूत गायब हो गए। उसने कड़क कर जवाब दिया, भूतों, तुम कुछ भी करो। यह मकान मेरा है। मैं भूतों...प्रेतों से नहीं डरता। तुम भाग जाओ। मैं एक-एक को देख लूंगा।"

वह अन्दर घुस गया। पुनिया का डर भी दूर हो चला। सब ने तुरन्त माचिस निकाल ली। खोज कर लालटेन जला दी। रामसुख ने लाठी उठाई। पुनिया ने बांका निकाल लिया। फिर दोनों कूद कर छत पर जा चढ़े। देखा तो, दोनों भूत मकान के पीछे भागते जा रहे थे। रामसुख ने जोर की आवाज लगाई, "अरे भूत भाई, कहां भाग चले। मुझे निकाल कर तो जाओ। लौट तो आओ जरा।"

रामसुख गांव में सब के सुख-दुख का साथी था। उसकी आवाज सुन-कर आस-पास के लोग इकट्ठे हो गए। लाठी, भाले, लालटेन और दीये सब के हाथ में थे। इससे उजाला फैल गया। भोला, मंगू, शंकर, रमई, शिवलाल आदि उसके लंगोटिया यार थे। रामसुख ने सब को हाल बता दिया। सभी यही कह रहे थे कि ये भूत नहीं हो सकते। कोई रामसुख भाई को परेशान करना चाहते हैं। यह सब उन्हीं भूतों का चक्कर है। फिर वे सब भूतों की खोज में जुट गए।

शोर-गुल सुनकर गांव के सभापति, सरपंच जी, मास्टर होरी लाल, दीप कुमार [ग्रामसेवक] और छज्जूराम स्वास्थ्य रक्षक भी आ पहुंचे। सभी ने देखा—भोला, शंकर, रमई और भोला चौकीदार दो आदमियों को पकड़ लिए

1. असली दोस्त

2. नई समझ

3. रामदास की खुशी

4. नई बात

5. कभी न हो बीमारी

6.

आ रहे है। दोनों को उजाले में लाया गया। उनके चेहरे काले रंग से पुते थे। नकली दाढ़ी मूछें लगी थी। वे काले लम्बे कुर्त्ते पहने हुए थे। उनके हाथों में लम्बे-लम्बे बांस थे। उन में थोड़ी-थोड़ी दूर पर चौड़ी लकड़ियां लगी हुई थीं। इन पर खड़े होकर कोई भी आदमी काफी लम्बा दिखाई पड़ सकता था।

रामसुख के दोस्तों ने उन भूतों को उजाले में ला पटका। लोग उन्हें पीटने लगे।। दोनों भूत पहले तो खूब उछले-कूदे। फिर जोर-जोर से चीखने लगे, "अरे भैया, मत मारो, मत मारो, मैं तो पोखन हूं तुम्हारा पड़ौसी—दूसरा रोता हुआ बोला, "अब न मारो, अब न मारो, मैं तो गन्जू हूं पोखन का भाई।"

बने हुए भूतों की पिटाई रोक दी गई। सरपंच जी ने उनकी नकली दाढ़ी-मूछें नोचकर फेंक दी। उनके काले चोगे उतार फेंके गए। वे, नीचे सिर्फ लंगोट पहने हुए थे। गांव वाले, बच्चे, बूढ़े औरत-मर्द—सब उन्हें बड़े अचरज से देख रहे थे। ग्राम सेवक दीप कुमार ने उन्हें डांटते हुए पूछा, " अरे पोखन और गन्जू, तुम्हें यह क्या सूझी ?" पोखन और गन्जू ने दोनों हाथों से अपना मुंह ढक लिया। वे कुछ न बोले। मगर मास्टर होरी लाल कहने लगे। भाई मैं सब मामला समझ गया। असल में रामसुख के पिता में एक बुरी आदत थी। वे कर्ज ले लेकर शादी-ब्याह, गौने या त्योहारों पर खूब धूमधाम, और दावत-तवाजों पर फिजूल खर्चा करते थे। इन दोनों ने उनकी इस आदत का फायदा उठाया। वह दस मांगते तो यह बीस देने को तैयार रहते थे। जब काफी रुपए उन पर हो गए तो उन्होंने उनकी बहुत सारी जमीन अपने पास रेहन रख ली। वह तो कहो रामसुख के घर को अपनी मेहनत और होशियारी से संभाल लिया। नहीं तो इनके पिता तो इन्हें कर्ज ले लेकर भीख मांगने वाला कर गए थे। खैर, अब रामसुख इनके रुपए अदा करके अपनी जमीन वापस चाहता हैं। बस यही कुछ चक्कर है।

सरपंच जी ने पोखन और गन्जू को खूब डांटा-फटकारा। मुकदमा चलाने की धमकी दी। मामला पुलिस में देने की बात कही। तब दोनों ने असली राज की बात उगलनी शुरू की। दोनों की गहरी योजना थी। वे चाहते थे कि अगर किसी तरह से, रामसुख गांव से भाग जाय तो उनको जमीन नहीं वापस करनी पड़ेगी। साथ ही रामसुख का लम्बा चौड़ा मकान भी वे दोनों हथिया लेंगे।

सभापति जी ने पोखन और गन्जू से साफ-साफ कह दिया, "देखो, तुम रामसुख की जीवन में अब तक अपने रुपयों से कई गुना अधिक लाभ ले चुके हो। अब तुम्हें तभी छोड़ा जा सकता है जब तुम रामसुख की सारी ज़मीन वापस कर दो। लिखा-पढ़ी के कागज लौटा दो, इन से माफी मांगो और आगे ऐसी हरकतें न करने की कसम खाओ।"

सब ने सभापति की हाँ से हाँ मिलाई। पोखन और गन्जू के चेहरे उतर गए। तभी रामसुख बोला, "सभापति चाचा, मैं चाहता हूँ कि इन दोनों को छोड़ दिया जाये। इनको अब काफी सज़ा मिल चुकी है और यह अब कोई ऐसा काम नहीं करेंगे। हाँ, मैं बापू का लिया हुआ एक-एक पैसा अदा कर दूँगा। तभी अपनी जमीन वापस लूँगा।"

यह सुन कर गांव वाले रामसुख की ओर बड़े अचरज से देखने लगे। उधर काले पुते हुए चेहरे देख-देखकर बच्चे तालियाँ पीट रहे थे। गन्जू रामसुख की ओर हाथ जोड़ कर बोला, "भैया, मुझे माफ कर दो। हम ने तुम्हें बहुत सताया है। पर तुम ने हमारे साथ हमेशा नेकी ही की है।"

पोखन अपने कान पकड़ कर बोला, "कसम खाता हूँ, अब सूद-खोरी कभी नहीं करूँगा। ऐसी गन्दी हरकतों से मेरी हज़ार तोबा। अब झूठ क्या बोलना, इन के दिए रुपए तो हमें पहले ही मिल गए थे। एक-एक पैसा पा चुका हूँ। अब जमीन इनकी हुई। कागज कल दे दूँगा। भैया रामसुख ने तो हमारी आंखें ही खोल दीं।"

रात काफी हो चली थी। आकाश में चांद ऊपर आ चुका था। चारों ओर उजाला फैल चुका था। सभी के चेहरे खुशी से चमक रहे थे। उधर, पोखन और गन्जू के दिल भी चांदी की तरह साफ दूधिया नजर आने लगे थे। ☆☆☆

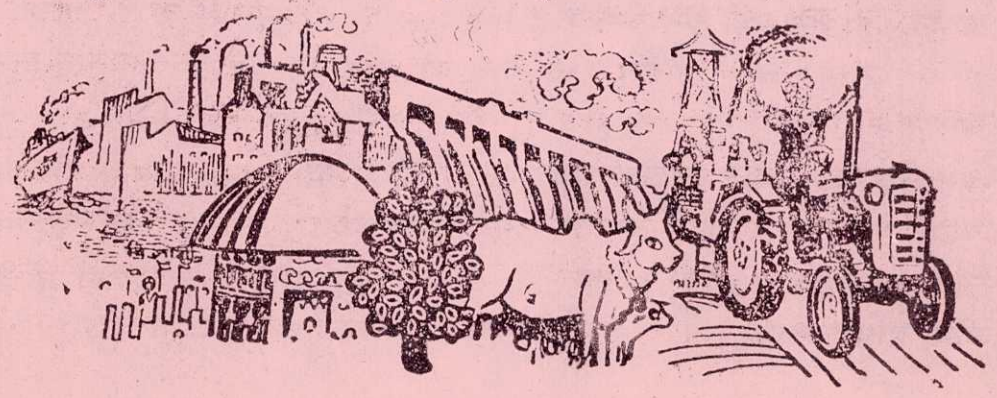

दिल-जली

[2]

चौधरी नोखेलाल के दरवाजे पर नीम का पेड़ है। उसकी घनी छाया तपती दोपहरी में बड़ा सुख देती है। बैल, चारा खाकर इसी के नीचे बैठकर मज़े में जुगाली किया करते हैं। चौधरी भी रोज़ खा-पीकर इसी की छाया में लेट कर थोड़ा सुस्ता लेता है। यार-दोस्त आ जाते हैं तो घर की या खेत की बातें होती हैं। न कोई हुआ तो बैलों की जोड़ी देख-देखकर वे खुश होते रहते हैं।

उन दिन धूप बहुत बड़ी तेज थी। चौधरी घर से निकल कर बस अभी खाट पर बैठा ही था, तभी पड़ोसी राम पदारथ आ गया। मुँह में लगी बीड़ी उसने नीचे डाल दी। फिर उसे पैर से मसल कर सामने पड़े मोढ़े पर बैठ गया। दोनों में राम-राम हुई। चौधरी मुसकाते हुए बोला, "अरे पदारथ भाई, जब पीते ही हो तो फेंकना क्या। मैं अपनी नाक बन्द कर लेता हूँ तुम आराम से पी लो।"

राम पदारथ हँसने लगा, फिर बोला, "क्या करूँ भाई, ऐसी बुरी लत पड़ गई कि छूटती ही नहीं। लोगों ने कितनी बार समझाया कि बीड़ी-सिगरेट, हुक्का, तमाखू पीना-खाना बड़ी हानि पहुँचाता है। फिर भी मन मानता ही नहीं। अब तुम्हीं कोई तरकीब बताओ जिससे यह लत छूट जाय।"

"अरे, क्या छोड़ना चाहते हो भाई पदारथ?"—पीछे से आवाज आई। दोनों ने देखा, लोटन महतिया हाथ में हुक्का पकड़े खड़ा है। उसने निगाली से दो बार कश खींचा। गुड़-गुड़ की आवाज हुई। फिर वह जोर-जोर से खाँसने लगा। खांसी रुकी तो हुक्का चारपाई के पाए से टिका दिया और आगे

बोला, "मैं समझ गया, चौधरी कह रहे होंगे—बीड़ी न पियो, सिगरेट न पियो, हुक्का न पियो, तमाखू न खाओ। मैं कहता हूँ, जब हमारे बाप, दादा, परदादा, पर-परदादा यह सभी चीजें पीते-खाते थे तो हमारे पीने-खाने में क्या हरज है ? भला बताओ तो।"

चौधरी ने जेब से एक डिबिया निकाली, उसे खोला और उसमें से थोड़ी सौंफ तथा मिश्री की छोटी-छोटी डलियाँ निकालीं। फिर उन्हें हाथ पर रखकर मुँह में डाल लिया। उन्होंने थोड़ी सी सौंफ और मिश्री, महतिया व राम पदारथ को भी दी। अब वह कहने लगा, "असल में कुदरत ने कुछ चीजें ऐसी पैदा की हैं जिन्हें रोज़ खाना चाहिए। और कुछ ऐसी हैं जिन्हें दवा के तौर पर ही काम में लाना ठीक रहता है। तमाखू दवा वाली ही चीज है। इसे रोज़ इस्तेमाल करना ठीक नहीं। गांव के डाक्टर साहब कह रहे थे कि तमाखू में एक तरह की ज़हरीली चीज़ होती हैं जिसे निकोटीन कहते हैं। बीड़ी, सिगरेट और हुक्के आदि में भी तो तमाखू ही पी जाती है। तो जब कोई आदमी इन में से किसी चीज का आदी हो जाता है तो उसका शरीर पर बड़ा बुरा असर पड़ता है।" "मैं भी तो सुनूँ क्या बुरा असर पड़ता है।" महतिया थोड़ा चिढ़ कर बोला।

"भाई साहब, डाक्टर - वैद्य कहते हैं कि अगर इनके बुरे प्रभावों को लिखा जाए तो किताबें बन सकती हैं। और बनी भी हैं। लो, जो मुझे खास-खास मालूम हैं उन्हें गिना रहा हूँ।"

चौधरी ने तकिए को अपने घुटनों पर रख लिया। फिर उस पर हाथ रख कर बोले, "बेकार का खर्चा। महीने में दस-बीस रुपए बस यों ही फुंक जाते हैं। मुँह से बदबू आती है। जहाँ पीना शुरू किया वहाँ धुएं की घुटन भर जाती हैं। गला खराब रहता है। खांसी आने लगती है। जैसे कि महतिया भाई तुम्हें आ रही है। दमा बन सकता है। फेफड़े कमजोर हो जाते हैं। बलगम ज्यादा बनने लगता है। अगर फेफड़े में कोई रोग है तो वह और बढ़ जाता है। पेट खराब रहता है। भूख कम हो जाती हैं। खुश्की बढ़ जाती है। डाक्टर लोगों ने तो खोज-

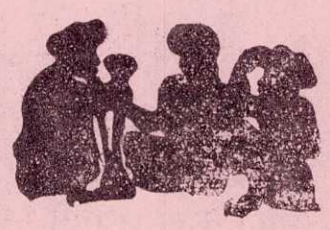

बीन करके यह बताया है कि इससे कैंसर तक हो सकता है। भैया, इसे तो दिल जली कहो 'दिल जली'। इसकी आग रग-रग में बुरा असर भर देती है।"

"बस-बस चौधरी, इतने नुकसान क्या कम हैं। अब तो यह बताओ कि तमाखू पीना-खाना छोड़ा कैसे जाय ?" राम पदारथ कुछ चिन्तित होकर कहने लगे।

महतिया बहुत कुछ शान्त हो गए थे। धीरे से बोले, "चौधरी, बातें तो सही कहते हो। कैंसर-वैंसर की बात तो मैं जानता नहीं। लेकिन बाकी बातें तो रोज ही देखने को मिलती हैं। जैसे खांसी-बलगम, हाथ कांपना, गले में खराबी, कब्ज आदि। और इन सब ने मुझे भी अच्छी तरह घेर लिया है।

"भाई महतिया, इसके बारे में कुछ बातें मैं और भी जानता हूँ।" चौधरी बड़े जोश में था। वह आगे कहता गया "वे तुम्हें भी बता रहा हूँ। अभी मैंने कहा कि कि तमाखू में एक तरह का जहरीला अंश होता है। इसका सबूत भी है। यह हुक्का तुम पी रहे हो। इसके नीचे पानी भरा है। इसमें से थोड़ा सा पानी तुम चींटी-चींटे, बर्र या ततैया आदि किसी छोटे जीव पर डाल दो तो वह फौरन मर जायगा। यही हाल तब होता है जब जरा सी तमाखू पीस कर उन पर डाल दी जाती है। अब तुम्हीं सोचो, इसी जहर को हम रोज कई-कई बार सुड़कते हैं। फिर इससे शरीर को हानि तो पहुँचेगी ही।"

चौधरी थोड़ा सा रुका और फिर कहने लगा, "महतिया भाई, हानि होने पर भी बच्चे, बड़े, औरत, मर्द सभी लोग बीड़ी-सिगरेट बहुत ही पीते हैं। देश-विदेश की सरकारों ने इसीलिए एक नियम बना दिया है। इस कानून के मुताबिक सिगरेट आदि के पैकिटों पर एक चेतावनी लिखी रहती है कि इसका पीना स्वास्थ्य के लिए हानिकारक है। हाँ, एक बात जरूर है कि बीड़ी, सिगरेट पीने या तमाखू खाने के बजाय हुक्का पीना कम खतरनाक है।

"भला ऐसा क्यों चौधरी ?" महतिया कुछ अचरज में भर उठा। चौधरी ने उसे समझाते हुए बताया, "होता यह है कि बीड़ी, सिगरेट या चिलम पीने में मुँह और तमाखू के बीच फासला बहुत कम होता है। इस लिए तमाखू का जहर शरीर में सीधे, और अधिक मात्रा में पहुँचता है। खाने वाली तमाखू तो मुँह में ही रख ली जाती है। उसका कहना ही क्या ? मगर हुक्के में ऊपर चिलम

रहती है जिसमें तमाखू होता है। नीचे पानी भरा होता है। फिर उस में लम्बी निगाली के जरिए कश खींचा जाता है। एक तो तमाखू और मुँह की दूरी बहुत कम रहती है। दूसरे तमाखू का जहरीला भाग अधिकतर पानी में ही रह जाता है। लेकिन इसका यह मतलब नहीं कि हुक्का खूब पीना चाहिए। हाँ, तमाखू पीने की आदत अगर किसी तरह नहीं छूटती है तो मजबूरी में हुक्का कभी-कभी पी सकते हैं।"

"चौधरी दादा, तुम तो बीड़ी-सिगरेट पीना न जाने कब से छोड़ चुके हो। अब हमें भी तो कोई तरकीब बताओ, जो यह छूट जाये।" राम पदारथ ने यह कुछ इस तरह कहा, मानो यह बात उस के दिल की गहराई से निकल गई हो।

चौधरी ऐसे बैठ गया मानो मास्टर जी हों। फिर बोला, "भैया, यह कोई कठिन काम नहीं है। आदमी अगर मन में ठान ले तो क्या नहीं कर सकता ? पूरी इच्छा होनी चाहिए। जिस समय सोचो, बस कसम खा लो कि अब नहीं पियेंगे। जब तलब उठे तो जरा सी सौंफ और मिश्री मुँह में डाल लिया करो। मैंने अभी-अभी तुम्हें सौंफ और मिश्री खिलाई भी है। शुरू में हो सकता है कुछ बेचैनी महसूस हो, पर मजबूत मन होने पर सब ठीक हो जाता है।"

महतिया के चेहरे पर अभी कुछ निराशा झलक रही थी। कहने लगा, "मैं तो कई बार छोड़ चुका हूँ। पर यार लोग मिल जाते हैं। उनकी सोहबत में फिर पीना शुरू कर देता हूँ।"

"देखो, बेकार का दिमाग शैतान का घर होता है। बुरी सोहबत, खराब संगत से खुद भी बचो और बच्चों को भी बचाओ। बुरी संगत, अनेक बुरी आदतों की जड़ है। इससे बच कर रहने में कल्याण है सब का।"

सूरज ढलान पर आ गया था। बैलों को खलिहान ले जाना था। राम पदारथ और महतिया उठ खड़े हुए। चलते-चलते महितया ने कहा, "अच्छा भाई चौधरी, तुम जीते, हम हारे। लो, आज से ही यह धुआं सुड़कना और तमाखू गटकना बन्द समझो।"

☆☆☆

मुठभेड़

[3]

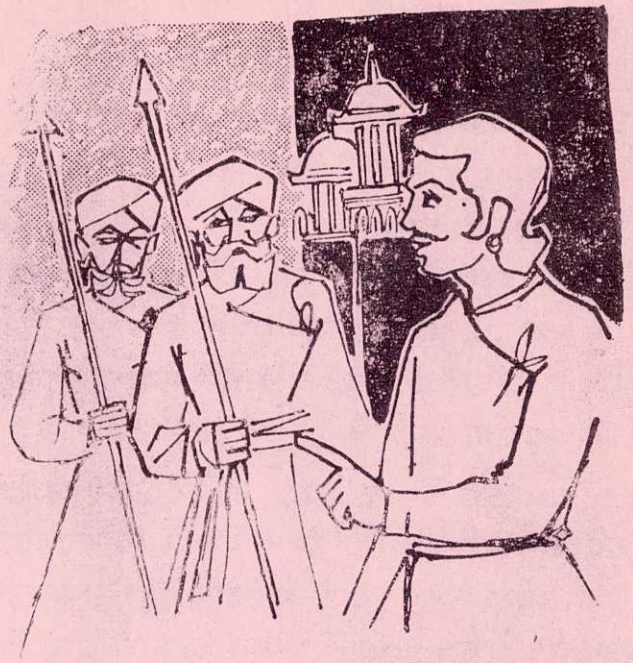

सुमेर चन्द बन्दूक चलने की आवाज सुनकर तुरन्त उठ बैठा। तड़ातड़ कई फायर हुए थे। हामिद के मकान के सामने ही उसका मकान था। उसको यह समझते देर न लगी कि आज हामिद चचा मुसीबत में हैं। उसने सिर में धोती लपेट ली। लाठी उठाई और बैटरी लेकर बाहर निकल आया। फिर वह चुपके से रतन लाल शर्मा के घर पहुँचा। वह भी जाग गया था और लाठी तथा बैटरी लेकर निकलने ही वाला था। दोनों साथ हो लिए और दबे-पांव जा पहुँचे हरखू पासी के घर। तीनों ने फौरन फैसला किया कि हामिद चचा की जान-माल व इज्जत हर कीमत चुका कर बचानी है। साथ ही इन डाकुओं को सबक भी सिखाना है। सुमेर चन्द बोला, "बस ठीक है। उन्हें अभी आराम से लूट-खसोट मचाने दो। हमें, एक दम चुप रहना है। जैसे ही लूट का माल लेकर चलने लगें वैसे ही हमारा काम शुरू हो जाना चाहिए। एक भी डाकू अगर निकल गया तो समझो कि हमारी ही नियत में फर्क है।"

वे तीनों अपनी योजना बनाकर चुपचाप, अलग-अलग अपने घर पहुँचे। सुमेर चन्द ने अपने दोनों भाइयों को समझा दिया, " भैया, आज हम सब को अपनी माँ के दूध की लाज रखनी है। हामिद चचा का अपमान डाकू कर रहे हैं, उस का बदला लेना बस तुम्हारी जिम्मेदारी है।"

रतन लाल के तीन बेटे और दोनों भतीजे पूरे जोश में थे। उन्होंने लाठी चूम कर कसम खाई, "दादा, अगर डाकू गाँव से एक भी पैसा ले गए तो हमारा जीवन बेकार समझना।"

हरखू पासी का पूरा परिवार तीर-कमान से लैस तैयार खड़ा था। अफजल भाई भी अपने दोनों भाइयों के साथ बिना किसी आवाज के सुमेर चन्द के घर आ पहुँचा। सब के दिलों में कुछ कर गुजरने की इच्छा थी। लेकिन भय और आशंका उनके चेहरों पर साफ-साफ झलक रही थी।

सिरों में ओढ़नियाँ, साड़ियाँ और चादरें लपेट-लपेट कर औरतें और सयानी लड़कियाँ भी पीछे नहीं थीं। वे भी हाथों में लाठियाँ, बांके, हंसिया, खुरपे आदि लेकर बाहर आ डटीं। बड़ी सावधानी से मोर्चा-बन्दी हो गई। सब चुपचाप हामिद चचा के मकान के चारों ओर छिप गए और बड़ी मुस्तैदी से समय का इन्तजार करने लगे।

उधर, डाकू गाँव वालों को चुपचाप देख कर उनकी कायरता पर मजाक कर रहे थे। वे बड़े इतमीनान से घर का माल समेट रहे थे। कुछ डाकू छत पर खड़े आसमान में गोलियाँ दाग रहे थे। गाँव वालों को गालियाँ बक रहे थे, "हराम जादों तुम में से अगर कोई बाहर आया तो भून के रख दिया जायेगा।"

हामिद चचा और उनके लड़के बंधे पड़े थे। औरतें एक झुंड में बैठी सुबक रही थीं। सिर्फ बच्चों का रोना-चीखना बाहर सुनाई पड़ रहा था।

डाकुओं ने सारा सामान बांध लिया। औरतों से, एक-एक छल्ला उतरवा लिया। घर का कोई बर्तन भी नहीं छोड़ा। बूढ़े हामिद चचा और उनकी घर वाली डाकुओं के सामने गिड़गिड़ा रहे थे, "अब तो कुछ भी बाकी न रहा जो था वह सब आपके हवाले कर दिया है। अब तो हम सब को छोड़ दो भैया।"

तभी बाहर से आवाज आई, "सरदार, सब ठीक हैं। हम चलते हैं। सीटी बजी। एक-एक करके डाकू बाहर निकलने लगे। सामान के आगे-पीछे चलने वाले डाकू हथियार लिए बड़ी सावधानी से इधर-उधर देख रहे थे।

डाकू जैसे ही घर के बाहर हुए कि एकाएक चारों ओर होहल्ला मच गया। डाकुओं पर गाँव वालों ने चारों ओर से एक साथ हमला बोल दिया।

लाठियां बरसने लगीं। तीर चलने लगे। ईंटों, ढेलों की बरसात शुरू हो गई। जिधर नजर जाती डाकुओं को गाँव वाले, औरत, मर्द, जवान, बूढ़े अपनी ओर दौड़ते दिखाई पड़ते। कुत्ते और जोर-जोर से भौंकने लगे। शोर-गुल और अधिक बढ़ गया। "मार लिया, जाने न पाये, वह गया इधर पकड़ो" की आवाजों से सारा गाँव गूँज उठा। इधर-उधर फूस-पुआल आदि के ढेर लगे

थे। गाँव वालों ने उनमें आग लगा दी। चारों तरफ उजाला ही उजाला छा गया।

मौका पाते ही घर की औरतों ने हामिद चचा और उनके लड़कों के हाथ-पैर खोल दिए। वे भी लाठियाँ लिए कूद-कूद कर बाहर आ गए। बहुओं ने छतों पर से ही पत्थरों से मोर्चा सम्भाल लिया। डाकुओं को दुबारा फिर पिस्तोलों और बन्दूकों में कारतूसें भरने का भी मौका न मिल सका। वे तो यह सोचे-समझे बैठे थे कि जब लूटते समय कोई न बोला तो बाद में कौन सामने आएगा। लेकिन उन्हें भारी मुसीबत का सामना करना पड़ा। वे सब घबरा उठे। इधर-उधर भागने लगे। पर उनकी सारी कोशिशें बेकार गईं।

इस भयानक मुठभेड़ में सात डाकू बुरी तरह घायल हो गए। पाँच को यों ही पकड़ लिया गया। और एक डर के मारे, वैसे ही बेहोश हो गया। तेरह के तेरह डाकू पकड़े गए। गाँव वालों ने सब को रस्सियों से बाँध कर हामिद चचा की चौपाल में बन्द कर दिया।

हीरा भाई गाँव के चौकीदार थे। जैसे ही उसे गाँव में डकैती का आभास हुआ, वैसे ही साइकिल से जाकर रातों-रात उसने थाने में खबर कर दी। अभी गाँव वालों ने चैन की सांस ही ली थी कि पुलिस आ धमकी। जिले के पुलिस कप्तान तथा दूसरे अधिकारी भी आ पहुंचे। पकड़े हुए डाकुओं को पुलिस के हवाले कर दिया गया। अनेक गाँव वालों को भी चोटें आई थीं। किसी को कम तो किसी को ज्यादा। सब की मरहम-पट्टी की गई, कुछ को गाड़ियों में लिटा-लिटाकर अस्पताल पहुँचाया गया। डाकुओं को पुलिस वालों ने अपनी निगरानी में ले लिया।

सुबह होते-होते डाकुओं से मुठ-भेड़ की बात तीर की तरह चारों ओर फैल गई। इधर-उधर के गाँवों से झुंड के झुंड औरत - मर्द और बच्चे वहाँ पहुँचने लगे। गाँव में भीड़ इतनी कि मानों कोई बड़ा मेला लगा हो। सब के सामने कप्तान साहब ने सुमेर चन्द, रतन लाल शर्मा, हरखू पासी, अफजल भाई की घर वाली और हीरा चौकीदार को सरकार से इनाम दिलाने की घोषणा की। सभी अधिकारी, गाँव वालों की सूझ-बूझ, साहस, वीरता, एकता, आपसी-प्रेम और मिल कर काम करने की बात से बड़े खुश थे। जिलाधीश महोदय ने गाँव वालों की बड़ाई करते हुए कहा, "अगर हमारे गाँवों के सभी भाई-बहिनें,

बच्चे और बड़े इसी तरह जाति-पांति के अलगाव छोड़ दें और संगठित होकर हिम्मत तथा होशियारी से काम लें तो डाकू, चोर और बदमाश हमारे गांवों की ओर बुरी नजर भी नहीं उठा सकते हैं।

कई साल बीत गए हैं इस घटना को हुए। मगर तब से आज तक उस गाँव में न कोई चोरी हुई है और न डकैती। वहाँ की नानियाँ और दादियाँ अपने नाती-पोतों को यह कहानी अक्सर ही सुनाती हैं। बच्चों ने तभी से अपने मन में ठान लिया है कि अब वे हमेशा, मिल - जुल कर रहेंगे और एक साथ जुट कर, हर काम को पूरा करेंगे।

राम दास की उलझन

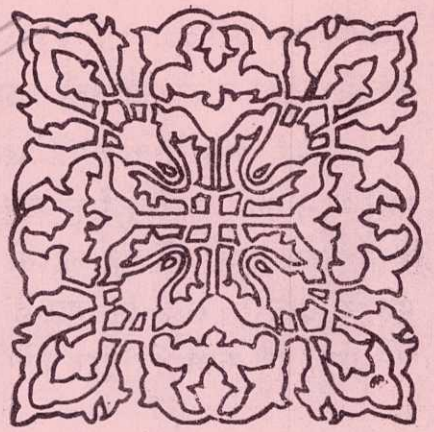

[4]

सूरज छिपने लगा। शाम घिर आई। बाजार में दुकानदारों ने अपना माल समेटना शुरू कर दिया। लोग सामान खरीद-खरीद कर घरों को चलने लगे। राम दास ने तरकारी का झोला हाथ में लिया। नमक की गठरी कंधे पर लटकाई और चल दिया। रात अपनी काली चादर खोलती जा रही थी। आसमान में तारे छिटकने लगे थे। अचानक राम दास को लगा कि सब कुछ काला हो गया है। रास्ता भी दिखाई नहीं देता। वह गिरते-गिरते बचा और वहीं बैठ गया। उसने अपनी आंखें बन्द कर लीं और फिर खोल कर देखा। देखने में सब एक जैसा लग रहा था काला। वह घबड़ा उठा। उसका छोटा भाई लाल दास पीछे रह गया था। उसने उसे आवाज दी। वह दौड़ा-दौड़ा आया। आहट पाकर राम दास बोला, "भैया, आज तो घना अंधेरा छा गया है। कुछ सूझता ही नहीं। अब घर कैसे चलोगे ?"

लाल दास अचरज में पड़ गया, बोला, "यह क्या कहते हो दादा। अभी अंधेरा कहां, बस रात हुई है। मुझे तो सब पूरा-पूरा दिखाई पड़ रहा है।"

राम दास हैरान रह गए। "तो क्या मेरी आँखें खराब हो गई हैं। मुझे तो कुछ भी नहीं दिखाई देता"—वह बोला।

गांव में एक छोटा सा सरकारी दवाखाना था। लाल दास ने उसे धीरज बंधाते हुए कहा, "दादा, चिन्ता न करो। कुछ बात है जरूर। अभी डाक्टर साहब के पास ले चलते हैं। सब ठीक हो जायेगा।"

लाल दास ने राम दास का हाथ पकड़ लिया। उन के हाथ का झोला खुद संभाला और वे चल दिए। राम दास का दिल धड़क रहा था। उसकी आँखें गीली हो गईं। मन में उथल-पुथल मच रही थी, "क्या मेरी आँखें गईं ? क्या अब मैं कुछ भी नहीं देख पाऊँगा ?"

" भाई राम दास चिन्ता की कोई बात नहीं है। तुम्हें रतौंधी हो गई है। यह विटामिन 'ए' की कमी से हो जाता है। दवा देता हूँ। खाओ, ठीक हो जाओगे। हाँ ज़रा अपने खाने-पीने का ध्यान रखो।" आक्टर ने अच्छी तरह जाँच करके बताया।

राम दास मुँह बाए डाक्टर साहब की ओर ताकने लगा। वे दवा निकाल रहे थे। फिर वह लाल दास से चुपके से बोला, " भैया यह विटामिन क्या होते हैं भला ?" " मैं क्या जानूँ दादा। अब तुम्हीं पूछ लो " लाल दास भी अचम्भे में आ गया था। उधर डाक्टर साहब ने इन दोनों की बातें सुन ली थीं। वे हँस कर कहने लगे, " भाई राम दास, तुम चिन्ता न करो। पहले दवा खाकर ठीक हो जाओ। फिर मैं तुम्हें विटामिनों के बारे में भी बताऊँगा। हाँ, इन दिनों तुम घी-दूध और हरी-पीली मौसमी तरकारियाँ खूब खाना।"

वे दोनों दवा लेकर एक दूसरे का मुँह ताकते हुए घर चले आए। लेकिन दोनों को एक और उलझन ने घेर लिया था। " यह विटामिन क्या बला है। जिसकी कमी से मुझे रात में दीखना ही बन्द हो गया।"

खैर, राम दास ने दवा खाई। दूसरे दिन कुछ आराम मिला। फिर चार-पांच दिन में वह बिलकुल ठीक हो गया। लेकिन विटामिन के बारे में उसकी उलझन बराबर बनी रही।

दोपहरी का सूरज सिर के ऊपर से खिसकने लगा था। बैल खा-पीकर पेड़ों के नीचे लेटे-बैठे या खड़े-खड़े जुगाली कर रहे थे। डाक्टर साहब भी अपने मकान के सामने नीम के नीचे आ बैठे। भला, राम दास और लाल दास को चैन कहाँ। मन में उलझन जो थी। वे दोनों भी वहीं आ बैठे। डाक्टर साहब मुसकाने लगे। फिर वे बोले, अब तो तुम ठीक हो राम दास भाई। आज तुम्हें जरूरी विटामिनों के बारे में बताऊँगा।"

डाक्टर साहब खाट पर बैठे थे। उन्होंने तकिया उठा कर घुटनों पर रख लिया और उस पर हाथ टेकते हुए आगे बोले, "असल में विटामिन आदमी के असली दोस्त हैं। मतलब यह कि खाने-पीने वाली सभी चीज़ों में बहुत थोड़ी मात्रा में कुछ चीजें होती हैं। यह आदमी को स्वस्थ और नीरोग बनाए रखती हैं। यही चीजें विटामिन कहलाती हैं। जब कुछ समय तक ये चीजें या विटामिन हमारे शरीर को नहीं मिलते तो शरीर में तरह-तरह की खराबियाँ होने लगती हैं। इसी से मैंने विटामिनों को आदमी का असली दोस्त बताया था।"

राम दास बड़े ध्यान से सुन रहा था। बोला, "तो डाक्टर साहब क्या विटामिन कई तरह के होते हैं?"

"हाँ भाई, अब तक एक दर्जन से ऊपर विटामिनों का पता लगाया जा चुका है। इन में खास-खास विटामिन हैं— ए, बी, सी, डी, ई और के आदि।"

दोनों को ये बातें नई-नई लग रही थीं। बड़ा मजा आ रहा था उन्हें। वे जान ही नहीं पाए कि कब गाँव के कुछ और लोग भी वहाँ आ बैठे थे। लाल दास बोला, "डाक्टर साहब, इनके बारे में कुछ और बातें भी बताइए, जिससे हमें आगे कोई तकलीफ न होने पाए।"

डाक्टर साहब ने कहा, "देखो भाई, विटामिन 'ए' की कमी का फल तो तुम भुगत ही चुके हो। इसकी कमी से रतौंधी, सर्दी-जुकाम आदि जल्दी-जल्दी हो जाया करते हैं। शरीर में रोगों से लड़ने की ताकत भी कम हो जाती है। शरीर का विकास भी ढंग से नहीं होता। अगर इसकी कमी की ओर ध्यान न दिया जाय और यह काफी दिन तक रहे तो गुर्दों में पथरी का रोग, आमाशय का घाव आदि भी हो सकते हैं। विटामिन 'ए' बच्चों के लिए बहुत जरूरी होता है। यह गाजर, टमाटर, पालक, बन्दगोभी, चौलाई, सहजने, धनिए की हरी पत्ती,

आम, पपीता, संतरा, खजूर, कमरख, दूध, घी, मक्खन, अंडा और मछली के जिगर के तेल में काफी होता है।"

वे थोड़ा रुके। फिर खांस कर आगे कहने लगे, "विटामिन 'बी' कई तरह का होता है। जैसे बी-1, बी-2, बी-6, बी-12 और बी मिश्रित या बी काम्पलेक्स आदि। विटामिन बी-1 की कमी से 'बेरी-बेरी' का रोग हो जाता है। यह विटामिन चावल की ऊपरी परत, गेहूँ के चोकर, दालों, गिरियों, मूंमफली, मांस, मछली, अंडा, सब्जियों, फलों और दूध में खूब होता है।"

"दूसरी तरह के जो विटामिन 'बी' हैं उनकी कमी से शरीर में दुर्बलता, सूजन, मुँह में छाले या घाव, दिल की कमजोरी, भूख की कमी, चिड़चिड़ापन, नींद ठीक न आना, आंख व चमड़ी के रोग आदि हो जाते हैं। अगर हम अपने रोज के भोजन में छिलके सहित जौ, चना, गेहूँ, दालें, गिरियाँ, मौसमी फल-तरकारियाँ, दूध और दूध से बनी दूसरी चीजें लेते रहें तो 'बी' विटामिनों की कमी नहीं होने पाएगी।"

इसी तरह विटामिन 'सी' भी बहुत जरूरी होता है। इसकी कमी से 'स्कर्वी' नाम वाला रोग हो जाता है।

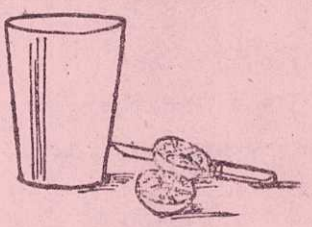

नींबू का शरबत

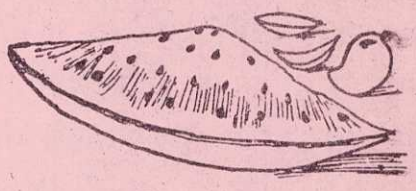

तरबूज, कच्चा आम

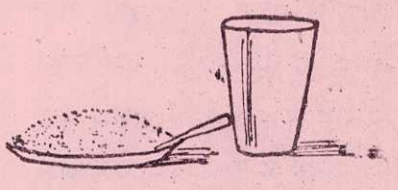

सत्तू

ठंडाई

मसूढ़ों से खून आने लगता है। घाव देर में भरते हैं। कमजोरी महसूस होती रहती है। विटामिन सी सन्तरा, नींबू, टमाटर, मौसम्बी, आम, पपीता, गोभी, फूल गोभी, मटर, आदि से हमें मिलता है। यह सब से अधिक होता है आंवले में। इसी से हरे या सूखे हर तरह से आंवले खाने चाहिएं।"

डोरे लाल महतो काफी देर से बार-बार अपनी गर्दन उचका रहा था। डाक्टर साहब रुके तो फौरन बोला, "डाक्टर साहब मेरे लड़के के पैर कुछ-कुछ टेढ़े-मेढ़े हैं। डेढ़ साल का हो गया। पर ढंग से चल ही नहीं पाता। दुबला भी खूब है। क्या यह भी कोई विटामिन की कमी है?"

हाँ भाई, डाक्टर कहने लगे, "अब मैं वही बताने जा रहा हूँ। बच्चों के लिए विटामिन 'डी' बहुत जरूरी होता है। इसकी कमी से बच्चों के शरीर की बढ़वार सही ढंग से नहीं हो पाती है। उनकी हड्डियाँ नरम पड़ जाती हैं। हड्डियों और दांतों की बनावट बेढंगी हो जाती है। उन्हें रिकेट्स और सूखा हो जाता है। मुझे लगता है कि आपके बच्चे को रिकेट्स का रोग हो गया है। कल दिखाना तो उसके इलाज का इन्तजाम कर दूँगा।"

डाक्टर साहब रुक गए। उन्होंने सब की ओर नज़र डाली। सभी लोग लगन से सुन रहे थे। वे आगे बोले, "विटामिन 'डी' काड मछली के जिगर के तेल, अंडे के पीले भाग, दूध, मक्खन से खूब मिलता है। एक और मजेदार बात है। अगर हल्की धूप में नंगे बदन बैठा जाय तो शरीर में विटामिन 'डी' अपने आप बनने लगता है। हल्की धूप में अगर तेल मालिश की जाय तो कहना ही क्या। बच्चों के लिए तो यह और भी लाभदायक है।"

वे बराबर बताते रहे, "विटामिन 'ई' का संबंध संतान पैदा करने की क्षमता से होता है। यह गेहूँ तथा दूसरे अनाजों—मांस, दूध तथा गेहूँ के अंकुर के तेल आदि में अधिक होता है।"

राम दास ने उन्हें बीच में ही रोक कर कहा, "तो डाक्टर साहब, अब आप हमें ऐसी तरकीब बतावें जिससे कि ये विटामिनें रोज शरीर में अपनी जरूरत-भर को पहुँचते रहें।"

"देखो भाई," डाक्टर साहब बोले, "सभी तरह के अनाज तो घरों में होते ही हैं। गुड़ भी बनाते हो। घर में या घर के पास जो जमीन बेकार पड़ी है उसमें मौसमी तरकारी उगाओ और कुछ फलों के पेड़ भी लगा दो जिससे फल

आसानी से मिलते रहें। गाय, भैंस या बकरी पालो। जिससे दूध मिल सके। बस इन्हीं सब चीजों से जरूरी विटामिन मिल जाते हैं। इन सब चीजों में कीमत भी कोई अधिक नहीं लगती। बस भाई मेहनत तो होती ही है। मेहनत करनी चाहिए डटकर।"

दिन ढलने लगा। धूप कम हो चली सब को खेतों पर जाना था। उधर डाक्टर साहब के दवाखाने का समय भी हो रहा था। सब उठ खड़े हुए। राम दास और लाल दास के चेहरों पर खुशी झलक रही थी। शायद यह सोचकर कि अब उन्हें कमजोरी और रोग बहुत कम सतावेंगे।

बिटिया का गीत

[5]

सीतापुर जिले में अकबरपुर एक गांव है। वहाँ एक किसान रहता था। उसका नाम सूरज दीन था। उस के दो लड़के थे। बड़े का नाम था हरि राम और छोटे को कहते थे सीता राम। सूरज दीन खेती में डट कर मेहनत करता था। घर वाली और दोनों बेटे भी उसका हाथ बंटाते। अच्छी पैदावार होती थी। उनमें बुरी आदत कोई भी नहीं थी। इसलिए घर में किसी चीज को कोई कमी थी नहीं। परिवार बड़े आराम से बसर कर रहा था।

सूरज दीन के दोनों लड़के पढ़ने-लिखने में बहुत तेज थे। समय बीतते देर तो लगती नहीं। देखते-देखते ही हरि राम दसवें दर्जे में पहुँच गया और सीता राम आठवें में। माता-पिता अपने दोनों लड़कों को देख-देख कर बड़े मगन रहते। एक दिन की बात है। सूरज दीन और उसके दोनों लड़के अपनी चौपाल में बैठे थे। सूरज दीन खाट के लिए बान तैयार कर रहा था। लड़के उसकी मदद में जुटे थे। दोपहरी का समय था। हवा तेजी से चल रही थी। बाहर नांदों पर बैल गर्दन हिला-हिलाकर चारा खा रहे थे।

तभी सरपंच, रघुबर आ गए। दोपहर में तो हर किसान काम-धाम से छुट्टी पा लेता है। उन्हें देख गाँव के कुछ और लोग भी आ बैठे। बातें शुरू हो

गईं। और बातों के शिकार बने सूरज दीन के दोनों बेटे। सरपंच रघुबर बोले, "सूरज भाई, मेरी मानों तो पढ़ा-लिखा कर हरि राम को मास्टर बनाओ और सीता राम को थानेदार।"

सूरजदीन ने हँसते हुए जवाब दिया, "सरपंच भाई, मैं तो चाहता हूँ कि ये दोनों अच्छे किसान बनें। फिर आगे भगवान की जैसी इच्छा।"

"अरे भाई, यह क्या सोचते हो ? तुम्हें कमी ही किस बात की है। इनको आगे बढ़ने का मौका दो। किसान बनाकर क्यों इनकी जिन्दगी बरबाद करोगे ?" सरपंच ने उसे समझाया।

गिलासों की खनक से सब का ध्यान टूटा। देखा तो सूरज दीन की घर वाली भुने चनों में घी व नमक-मिर्च मिला कर ले आई थी। साथ में उनकी छोटी लड़की गिलास और शर्बत लिए खड़ी थी। चने और शर्बत के दौर चलते रहे। उधर बातें भी जारी थीं। सुख देव चौधरी का लड़का भी नवीं में पढ़ता था। वे बोले, "भैया, मैं तो अपने लल्लू को वकील बनाऊँगा। कैसी बड़ी-बड़ी कोठियाँ और कारें हैं शहरों में वकीलों की।"

"और मैं तो डिप्टी कलक्टर बनाऊँगा अपने राधे को"—राम दयाल सभापति ने तपाक से अपना मत जाहिर करते हुए कहा। सूरज दीन बोला, "भाई यह तो बड़ी अच्छी बात है कि गाँव के कुछ लड़के बड़े-बड़े ओहदों पर जाएं। लेकिन हमको अपनी जमीन, अपनी खेती-बाड़ी का भी तो ख्याल रखना है। अब मान लो कि गाँव के सभी लड़के शहरों में निकल जायें, नौकरी करने या रोजगार करने, तो गाँव में खेती कौन चलाएगा।"

"हाँ यह तो एक भयंकर बात हो जाएगी गाँवों के लिए। आखिर हम बूढ़े कब तक काम-धाम चला सकेंगे ?" कहते-कहते लोटन मामा के चेहरे पर रंज की रेखायें उभर आईं।

"लेकिन भाई इसका मतलब तो यह हुआ कि सारी नौकरियाँ और बड़े-

बड़े ओहदे सब शहर वालों के ही लिए हैं। राम दयाल सभापति ने पूछा।

"अरे भाई सभापति, इसका जवाब मैं देता हूँ"—सबने घूम कर देखा मास्टर रघुवंश खड़े मुस्करा रहे थे। वे कहने लगे, "आप लोग नहीं जानते कि आजकल नौकरियों का कितना बुरा हाल है। एक जगह खाली होती है तो सैकड़ों उसके उम्मीदवार होते हैं। गाँव का थोड़ा या बहुत—हर पढ़ा-लिखा लड़का नौकरी चाहता है। और नौकरी की तलाश में शहरों की ओर सब भागते हैं। वे आम तौर पर मेहनत से जी चुराते हैं। घर में खेती-बाड़ी या और, गाँव में रह कर कोई और काम करना नहीं चाहते। वे पढ़-लिखकर खेती करने में शर्म महसूस करते हैं। बस नौकरी या शहर में, कुछ और काम करके वहाँ की टीम-टाम की जिन्दगी में खिंचे चले जाते हैं। उधर नौकरियाँ तो इतनी होती नहीं। सो न वे इधर के रहते हैं न उधर के।"

वह थोड़ा रुके। सब की ओर देखा और फिर आगे कहने लगे, "यह तो हुई गाँव के नौजवानों की एक समस्या। अब आपके सवाल का जवाब देता हूँ।" नौकरियाँ कोई शहर वालों के लिए ही थोड़े होती हैं। चूंकि शहर के लोगों के पास खेती-बाड़ी तो होती नहीं। इसलिए वे लोग पढ़ाई-लिखाई पर खूब जोर देते हैं। अधिकतर वहीं के लड़के-लड़कियाँ ऊँचे नम्बरों से पास होकर नौकरियों की होड़ में सफल होते हैं। अब अपने गाँवों के लड़कों को भी चाहिए कि खूब मन लगाकर पढ़ें। हम लोग उनकी हर सुविधा का ध्यान रखें। फिर जो लड़के पढ़ाई में अच्छे साबित हों, उनको ही नौकरियों के लिए कोशिश करनी चाहिए। लेकिन जो पढ़ने-लिखने में साधारण लड़के हैं, उन्हें मतलब भर को पढ़ कर अपनी खेती-बाड़ी संभालनी चाहिए या फिर गाँव में ही और कोई काम धंधा करना चाहिए। बेकार शहर की ओर भागना और वहाँ धक्के खाना या गलत सोहबत में पड़ कर गुंडे-बदमाश बन जाना ठीक नहीं है।"

"हाँ, खैर यह बातें तो सही हैं मास्टर जी की।" जय दयाल सोनार ने उनकी हाँ में हाँ मिलाई, "रेडियो और अखबारों में भी तो आता है कि अपने

देश में लाखों नौजवान जो पढ़े-लिखे हैं बेकार हैं। हो सकता है यही कारण हो।"

खेलावन बड़ी देर से कुछ कहने वाला था। मौका मिला तो बोला, "तो भाई, जब अपने लड़कों को शहर में नौकरी करने भेजना ही नहीं तो उन्हें पढ़ा-लिखा कर क्या होगा ?"

"आपने दोनों बातें गलत समझीं खेलावन भाई," सूरज दीन बोला, "गाँव के लड़कों को भी नौकरी के लिए कोशिश करनी चाहिए। लेकिन उन्हीं लड़कों को जो पढ़ने में बहुत तेज हैं, जिनकी जमीन थोड़ी है। या नहीं है। या फिर जिनके यहाँ तमाम लोग खेती-बाड़ी करने वाले हैं। दूसरी बात यह कि पढ़ाई फिर भी जरूरी है। पढ़ा-लिखा आदमी जिस काम को करता है उसे ढंग से करता है। फिर चाहे वह खेती हो, दुकानदारी हो या नौकरी हो। खेती के लिए तो और भी पढ़ा-लिखा होना जरूरी है। क्योंकि अब खेती नए ढंग से होती है। बे-पढ़ा आदमी नए-नए तौर-तरीकों को, नई-नई बातों को अच्छी तरह समझ ही नहीं सकता। और न किताबों, अखबारों या पत्रिकाओं से ही कुछ जानकारी पा सकता है। इसलिए गाँव के लड़कों को पढ़ाना बहुत ही जरूरी है। जिसकी जितनी ताकत है उतना पढ़ाए। और फिर घर के काम-काज में उन्हें जुटाया जाय।

"लेकिन भाई, एक बात समझ में नहीं आई। गाँवों में जिनके पास जमीन कम है। या घर में काम करने वाले काफी लोग हैं, वे गाँव में और क्या करें ? शहरों में तो काम की कोई कमी होती नहीं। गाँवों में लोग खेती के साथ-साथ भला और क्या कर सकते हैं ?" जय दयाल सोनार ने अपनी शंका सामने रखी।

"भाई, गाँव में काम की कमी नहीं है। गाँवों में उद्योग-धंधे पहले भी खूब थे। जैसे बढ़ईगीरी, लोहारगीरी, सोनारी, मिट्टी के बर्तन बनाने का काम, पंखा-चटाई का काम, कपड़े धोने का काम। लेकिन अब इन कामों में काफी ढील आ गई है। इन कामों की तरक्की होनी चाहिए। इसके अलावा भी बहुत से काम-

धंधे हैं जैसे – खाट के बान, खेती के औजार, दरी, कपड़ा-बुनना यानी करघे का काम, माचिस, साबुन तैयार करना, तेल पेरने के कोल्हू, धान कूटने, आइसक्रीम की मशीन लगाना, खिलौनों का उद्योग, भैंसे पाल कर दूध-मक्खन का काम, मुर्गी पालन, भेड़ पालन, पानी का इंजन चलाना, साइकिल, ट्रैक्टर, चक्की और दूसरी मशीनों की मरम्मत का काम। भैया, काम तो बहुत हैं। जरूरत है मेहनत की, लगन की और समझ-बूझ की। काम के समय डट कर काम करो। फिर उजले कपड़े पहन कर हँसो-खेलो। न किसी की नौकरी, न

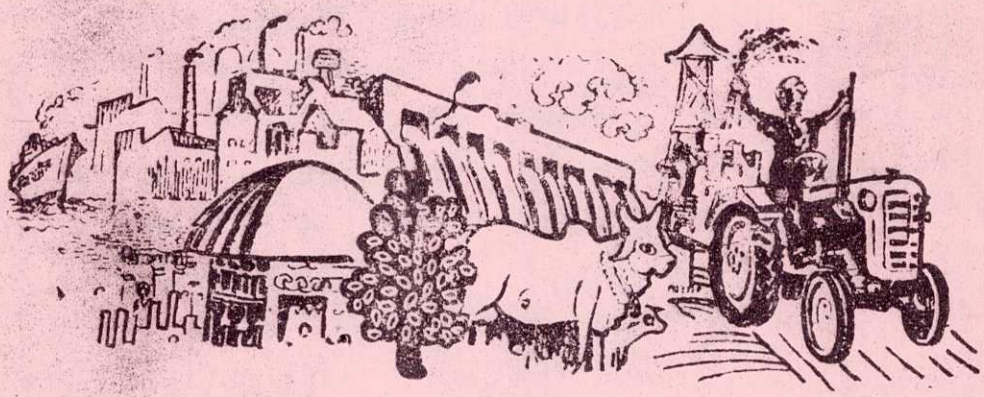

गुलामी और न इधर-उधर मारे-मारे घूमने की नौबत। इसी से अपने पुरखे कह गए हैं :

" उत्तम खेती मध्यम बान
निषिद् चाकरी भीख निदान "

"यह तो सब ठीक है लोटन मामा। पर काम-धंधों के लिए गाँव वालों के पास पैसा कहाँ से आए ?" मनोहर काका ने पूछा।

"अब सुनो" सुख दीन बोला, "भाई अब तो सरकार ने गाँवों में उद्योग-धंधों के लिए मदद देने की तरह-तरह की स्कीमें निकाली हैं। अपने ग्राम सेवक जी, सरपंच जी, सभापति जी तथा ब्लाक के अधिकारियों से मिल कर इनके बारे में सब जाना-समझा जा सकता है। रुपए पैसे भी, ट्रेनिंग भी और जानकारी भी हर तरह की मदद मिल सकती है।

तमाम लड़के वहाँ आ बैठे थे। हरि राम बड़ी देर से कुछ कहना चाहता था, बोला, "सभापति चाचा अब अपने गाँव में कमी ही क्या है ? सड़क है, स्कूल, अस्पताल हैं, बिजली है। मैं तो पढ़-लिखकर गाँव में ही कोई काम-धाम करूँगा।"

"मैं तो अपनी खेती नए ढंग से करूंगा। जब पढ़ाई खत्म हो जायगी"– दूसरा लड़का कहने लगा।

वहाँ मौजूद सभी लड़के—कोई न कोई स्कीम लिए नजर आ रहे थे। सब के चेहरों पर एक चमक सी दौड़ रही थी। बड़े-बूढ़े उठ खड़े हुए। देखा तो शाम हो चली थी। पूरा चन्द्रमा आकाश से उजाला उंडेलने को तैयार खड़ा था। उधर सुख दीन की छोटी बिटिया कूद-कूद कर गा रही थी :

भैया यहीं कमाएगा, दूर कहीं न जाएगा ॥
गाँव में रौनक आएगी, भाग गरीबी जाएगी ॥

सब हँसने लगे। मास्टर जी मुसकाते हुए बोले, "अब तो लगता है सच-मुच हमारे गाँव में खुशहाली आने वाली है।

⁂ ⁂ ⁂

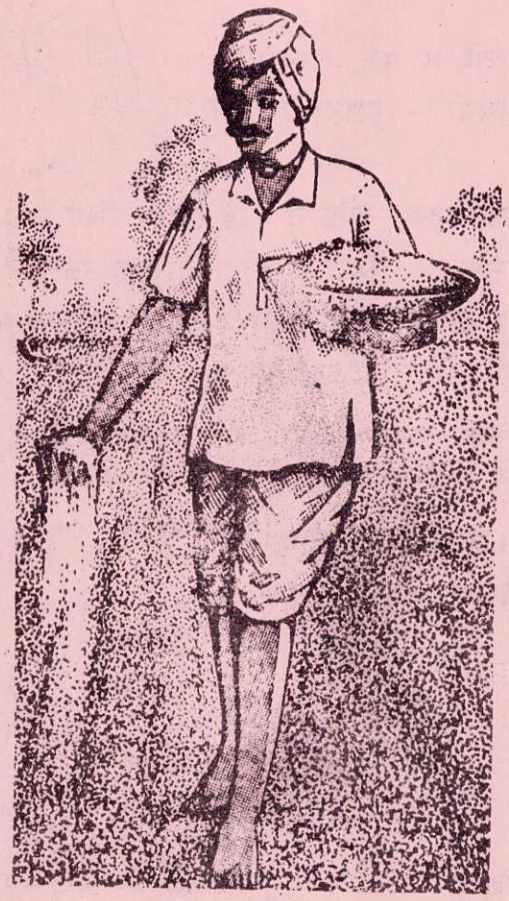

ग्रामीण साहित्य माला के अन्य पुष्प

1.	समाज का अभिशाप	ब्रह्म प्रकाश गुप्त
2.	मेरे खेत में गाय किसने हांकी ?	जोगेन्द्र सक्सेना
3.	नयी जिन्दगी	गणेश खरे
4.	कल्याण जी बदल गये	अ० अ० अनन्त
5.	रधिया लौट आई	कमला रत्नम्
6.	एक रात की बात	इन्दु जैन
7.	जीवन की शिक्षा (लोक कथाएं)	नारायण लाल परमार
8.	आग और पानी	डॉ० प्रभाकर माचवे
9.	शहर का पत्र गाँव के नाम तथा बढ़ते कदम	डॉ० योगेन्द्र नाथ शर्मा 'अरुण' विमला लाल